AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

स्वामी विवेकानन्द की विद्या साधना

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. संतोष रजक
अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग
कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्टस एण्ड साइंस
पटना, बिहार, भारत

शोध सार

विद्या तप साधना और समर्पण से प्राप्त होती है। इसके बिना कोई भी विद्या प्राप्त नहीं कर सकता है। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन में इन्हीं गुणों के बदौलत लौकिक और अलौकिक विद्या प्राप्त किया था। वे बचपन से ही प्रतिभाशाली थे। वे विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से आकादमिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ क्रीडा, संगीत, नाटक, वाद्य, कुश्ती, तैराकी, मुक्केबाजी, नौकायन, व्यायाम इत्यादि में पारंगत थे। इसके अलावा वे बचपन में ही खेल–खेल में ध्यानमग्न हो जाते। छात्र काल में ईश्वरीय संबंधी विषयों को जानने हेतु उनका मन व्याकुल हो जाता और उन्होंने अपने गुरू रामकृष्ण देव की कृपा से ईश्वरीय विद्या की भी अनुभूति किया। स्वामी विवेकानंद एक ऐसा महासमुद्र है, जिनमें राष्ट्रीयता, अंर्तराष्ट्रीयता, धर्म, विज्ञान, राजनीति, वेद, उपनिशद, महाकाव्य ग्रन्थ सब के सब सम्माहित है। ऐसी प्रखर प्रज्ञा, ऐसा विवेक ऐसी लोक संवेदना साधना की ऐसी उद्यमशीलता, तप, समर्पण और लगन से ही प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द

प्रखर प्रज्ञा, आत्मतत्व, अनुभूति, एकाग्रता, तिरोधान, विवेकानंद.

आधुनिक युग के द्रष्टा स्वामी विवेकानन्द ने अपने जीवन में अनेकों विद्याओं की साधना किया था और अपने जीवन के अनुभवों को दुनियाँ के सामने एक आदर्श के रूप में स्थापित किया। स्वामीजी की प्रथम शिक्षा उनकी माता भूनेश्वरी देवी की छत्रछाया में हुई। उनकी प्रथम गुरू माता भूनेश्वरी देवी ही थी। उनकी माता जी स्वयं शिक्षित, बुद्धिमती, कार्यकुशल और भगवत्परायण थी। वे सभी विषयों में निपुण होने के साथ–साथ मधुर, मितभाषी, गम्भीर स्वभाव, तेजास्विनी और सेवापरायण थी। वे स्वामी जी को अपनी गोद में ही अपने कुल के गौरव पितामह आदि की बातें, भारत के महापुरूषों तथा देवी–देवताओं की कहानियाँ सुनायी थी। इस तरह स्वामी जी ने अपनी नानी रघुमणी देवी से भी बहुत–सी भागवद पुराण और संतों की कहानियाँ सुनी थी। इसी तरह स्वामी जी की प्रथम शिक्षा माँ और नानी की गोद में हुई।

स्वामी विवेकानंद की माँ ने उन्हें बचपन में ही नैतिकता और दृढ़ता की शिक्षा दी थी। वो स्वामी जी से अक्सर कहा करती थी कि ''बेटा जिसे सच समझते हो उसे सदैव ही करते जाना। सम्भवतः कई बार इसके लिए अनुचित और अप्रिय फल भोगना पड़ेगा किन्तु सत्य का कभी त्याग न करना''। उनकी माता ने यही शिक्षा दी थी ''आजीवन पवित्र रहना, अपनी मर्यादा की रक्षा करना तथा कभी दूसरों के सम्मान पर आघात नहीं करना, अत्यन्त शान्त रहना किन्तु आवश्यक होने पर हृदय को दृढ़ रखना।''[1]

स्वामी विवेकानन्द अपनी माँ की शिक्षाओं को स्मरण करते हुए कहते थे– ''जो माँ की सच्ची पूजा नहीं करता, वह कभी बड़ा आदमी नहीं हो सकता है। अपने ज्ञान के विकास के लिए मैं अपनी माँ का ऋणी हूँ। एक बार नरेन्द्र के मित्र के पिता ने कहा कि तुम दिन भर घूम कर खेलते ही रहते हो कभी पढ़ते–लिखते नहीं हो क्या? नरेन्द्र ने कहा कि मैं दोनों ही काम करता हूँ – खेलता भी हूँ और पढ़ता भी हूँ।''

इसके अलावा स्वामी विवेकानन्द ने अपने नाना नृसिंह दत्त से अपने पुरखों की नामावली देवी–देवताओं के स्त्रोत मुग्धबोध व्याकरण सीखा था। स्वामी जी की अकादमिक शिक्षा भी विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं में प्राप्त हुई। मेट्रोपोलिटन विद्यालय में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए उनके पिताजी ने एक सुन्दर जेब घड़ी पुरस्कार में दी थी। एफ,ए, उत्तीर्ण कर बी,ए,में पढ़ते समय स्वामी जी ने भारतीय और पाश्चात्य इतिहास का पूरा अध्ययन किया। उच्च शिक्षा के साथ–साथ स्वामीजी ने खेल, संगीत नाटक, वाद्य, पाककला में भी निपुण थे। वे नाटक में भी भाग लेते थे। अखाड़ा में जाकर व्ययाम भी करते। वे लाठी भाँजने, तलवार चलाने, नौका चलाने, तैरने, कुश्ती करने, मुक्केबाजी करने, व्यायाम करने में भी पारंगत थे।

भाषण देने की कला में भी स्वामी जी काफी माहिर थे। प्रेसीडेन्सी कॉलेज में पढ़ते समय उन्होंने रचना, अलंकारशास्त्र, न्यायशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। अँग्रेजी साहित्य में वे दक्ष थे। एक बार प्रेसीडेन्सी कॉलेज में पुरस्कार वितरण समारोह और एक शिक्षक की विदाई समारोह का आयोजन हुआ। उस सभा के अध्यक्ष सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे। उस सभा में नरेन्द्र ने आधे घंटे अँग्रेजी में भाषण दिया जिसको सुनकर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी काफी प्रभावित हुए और उन्होंने कहा था – ''भारत वर्ष में मैंने जितने वक्ताओं को देखा है उनमें नरेन्द्रनाथदत्त सर्वोतम थे।''[2] उन्होनें भाषणकला से पूरे विश्व को प्रभावित किया। छात्र जीवन में उनके गुणों को देखकर प्रो. हेस्टी साहब ने कहा था ''नरेन्द्र वास्तव में एक प्रतिभाशाली युवक है।''

स्वामी विवेकानन्द को संगीत में भी गहरी रूची थी। संगीत उन्हें विरासत में मिली थी। उनके पिता विश्वनाथदत्त भी संगीत प्रेमी थे। वे निरंतर संगीत का अभ्यास करते थे। उनके दादा दुर्गा प्रसाद भी संगीत के साधक थे और उनका गला बहुत ही मधुर था। स्वामी जी की माता जी भी बहुत सुन्दर भजन गाती थी। ''उनके भाई महेन्द्रनाथ दत्त के अनुसार प्रत्येक शनिवार और रविवार को उनके घर में संगीत सभा होती थी, इस प्रकार संगीत साधक वंश से स्वामी जी सुगायक बने।''[3]

जब वे कोई संगीत गाते थे तो इतने भाव विभोर होकर गाते थे कि श्रोता मन्त्रमुगध हो जाया करते थे। उनकी संगीत विद्या के कारण ही श्रीरामकृष्ण देव से पहली भेंट हुई थी। एक बार श्रीरामकृष्ण देव सुरेन्द्रनाथ मित्र के यहाँ उत्सव में आये थे और नरेन्द्र दत्त वहाँ भजन गा रहें थे। भजन प्रिय रामकृष्णदेव उन्हें गाते देख भाव में डूब गये और नरेन्द्र को दक्षिणेश्वर में आने का नियंत्रण दिया। स्वामी जी जब पहली बार दक्षिणेश्वर में रामकृष्ण देव से मिलने गये तो बड़ा ही विरागी भजन सुनाया था। जब भी स्वामी जी दक्षिणेश्वर जाते ठाकुर जरूर उनका भजन सुनते। स्वामी जी ने ''संगीत कल्पत'' नामक पुस्तक लिखी लेकिन अधूरा रह गया।

लौकिक विद्या के अतिरिक्त स्वामी जी में अलौकिक विद्या पर विद्या ब्रह्म विद्या के प्रति भी बचपन से अत्यंत गहरी रूची थी। वे बचपन में ध्यान करने का खेल खेलते थे। वह ध्यान भी इतना प्रगाढ़ था कि विषधर नाग फन उठाये विद्यमान है फिर भी तनिक बोध नहीं हैं। भाव की ऐसी प्रगाढ़ता थी कि पर्वत मालाओं के बीच से जाते समय (1877 में) मधुमक्खियों के आदि – अन्त के रहस्य–चिन्तन में निमग्न होकर अपनी बाह्य चेतना खो बैठे। जब वे सचेत हुए तो बहुत दूर आ चूके थे। साधना की ऐसी तत्परता की युद्ध अवस्था से पंचवटी में ध्यान बोध गया में दिग्दर्शन होता है। आत्मानुभूति की विकलता उन्हें गाजीपुर के पवहारी बाबा की गुफा और अलमोड़ा के कसार देवी गुफा में खींचकर लेकर चली जाती है। भारत माता को गौरवान्वित करने की प्रबल आकांक्षा उन्हें कन्याकुमारी के शिलातल पर ध्यानमग्न कर देती है। भारत वासियों के दुख–द्रारिद्रय का निराकरण कर उन्हें पुनः गौरवशाली बनाने की दृढ़ इच्छा उन्हें भारत भ्रमण करने को प्रेरित करती है और अमेरिका जाने को विवश करती है।[4]

भगवान श्रीरामकृष्ण देव ने स्वामी विवेकानन्द को आत्मतत्व की अनुभूति कराकर उस अनुभूति मार्ग में ताला बन्द कर दिया था यह कहकर की जब माँ का काम पूर्ण हो जायेगा तब ताला पुनः खुल जायेगा। स्वामी जी ने कई बार उस ताला को खोलने का प्रयास किया, किन्तु वह ताला नहीं खुला और गाजीपुर में तो श्रीरामकृष्ण देव साक्षात् प्रकट भी हो गए। स्वामी जी समझ गए और तब वे उससे विरत हो गये। स्वाध्याय, पाठ, जप–ध्यान स्वामी जी के जीवन के अभिन्न अंग थे। वे इतनी एकाग्रता से अध्ययन करते थे कि पास में व्यक्ति आकर कब खड़ा हुआ उन्हें बोध नहीं होता था। बुद्धि इतनी तीक्ष्ण थी, विषय–वस्तु को एक बार पढ़े तो याद हो गयी। वे पुस्तक को शब्दशः नहीं, परिच्छेदतः और पृष्ठतः पढ़कर समझ जाते थे। छात्रावस्था में प्रवेशिका परीक्षा के दौरान रेखागणित की चार पुस्तकों को एक रात में ही पढ़कर उसमें सफल हो गये।''[5]

स्वामी जी बेलूर मठ में अत्यल्प समय में ही अँग्रेजी विश्वकोष पढ़ लिये थे। भारत भ्रमण में उन्होंने जयपुर में पाणिनी की अष्टध्यायी का अध्ययन किया। श्रीरामकृष्ण के तिरोधान के पश्चात् जब मठ वाराहनगर में था तब स्वामी जी अपने गुरू भाईयों के साथ स्वाध्याय, योगवशिष्ठ का पाठ, साधर–भजन कीर्तन, सत्संग, शास्त्र–चर्चा आदि में संलग्न रहते। अल्मोड़ा में अपने शिष्य–शिष्याओं के साथ सत्संग शास्त्र चर्चा और कसार देवी की गुफा में जाकर ध्यान करते थे। एकाग्रता इतनी थी कि विदेश में बच्चों के कहने पर पहली बार में ही बन्दूक से कितने अण्डे फोड़ दिये थे।''[6]

इस प्रकार हम देखते है कि स्वामी जी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में भी ब्रम्हचारियों को संस्कृत पढ़ा रहें थे व शास्त्र–चर्चा कर रहे थे। वेद विद्यालय की स्थापना की चर्चा कर रहे थे। अंत में ध्यान कर रहें थे और ध्यानावस्था में ही वे अपना शरीर त्याग कर ब्रह्मलीन हो गये। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने जीवन में परा और अपराविद्या दोनों की प्राप्ति के लिए काफी तप और साधना की थी।

निष्कर्ष

ज्ञान मानव शरीर का भूषण है। ज्ञान के बिना देश–विदेश, साहित्य, विज्ञान, इतिहास एवं अन्य बहुत कुछ जानना असम्भव है इसलिए ज्ञान–अर्जन के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य की उन्नति का सूत्र ही है – शिक्षा। विवेकानन्द सदैव भारत वर्ष में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए हृदय से प्रयास करते तथा देशवासियों को प्रेरित करते। उन्होंने भारत के लोगों के लिए मनुष्य निर्माणकारी, शिक्षा, कारीगरी शिक्षा और व्यवहारिक शिक्षा को महत्व दिया। स्वामी जी कहते अपनी अन्तरनिहित चेतना को जागृत करने का नाम ही शिक्षा हैं। ध्यान सिद्ध स्वामी विवेकानन्द बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। स्वामी जी कुशल वादक, गायक, उत्कृष्ट कवि, उत्तम लेखक, प्रखर वक्ता तथा शास्त्र–मर्मज्ञ थे साथ ही स्वामी जी निपुण वाचक भी थे। विशाल हृदय वाले स्वामी जी की रचनाओं, पत्रों में भाषा और भाव विशेष हुआ करते थे। रामकृष्ण संघ में गाई जानेवाली संध्या आरती उन्ही की रचना है। उन्होंने कई भजनों की रचना की। स्वामी जी के साहित्य में संस्कृत ज्ञान, विश्व इतिहास, कला स्थापत्य और मानव–प्रगति की झलक दिखाई देती है।

संदर्भ सूची

1. गम्भीरानन्द स्वामी, (1998) *युगनायक विवेकानन्द, खण्ड–1,* R.K.M नागपुर, पृ. 25।
2. वही, खण्ड, पृ. 53।
3. गम्भीरानन्द स्वामी, (1973) *भक्तमालिका, अध्याय–1,* R.K.M नागपुर, पृ. 53।
4. गम्भीरानन्द स्वामी, (1994) *युगनायक विवेकानन्द,* खण्ड–1, नागपुर, पृ. 26।
5. वही, अध्ययाय–1 पृ. 53।
6. *विवेकानन्द साहित्य,* खण्ड–6, अद्वैत आश्रम, कोलकत्ता 1990, पृ. 189।

––==00==––